A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June 2026
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2026
http://hillquest.pratibha-spandan.org

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत कला-समेकित शिक्षा: शिक्षण-अधिगम की नई दिशाएँ

Arti Gupta[1], Dr. Shivendra Pratap Tripathi[2]
1 Dayalbagh Educational Institute, Agra, Uttar Pradesh, India
2 Dayalbagh Educational Institute, Agra, Uttar Pradesh, India

Abstract
The National Education Policy (NEP) 2020 has introduced significant reforms in the Indian education system with a strong emphasis on holistic development and experiential learning. In this context, Art-Integrated Education has emerged as an important pedagogical approach that connects various art forms such as music, painting, drama, dance, folk art, and crafts with classroom teaching-learning processes. The primary objective of art-integrated education is to make learning more engaging, meaningful, and activity-based. This research paper analyzes the concept, principles, objectives, and significance of art-integrated education in classroom teaching under NEP 2020. The study also highlights practical examples from daily life and discusses the challenges and possible solutions related to its implementation. The findings reveal that art-integrated education promotes creativity, confidence, collaboration, critical thinking, and deeper understanding among learners, thereby contributing to their overall personality development.
Keywords: *National Education Policy 2020, Art-Integrated Education, Holistic Development, Creative Learning, Experiential Learning, Cultural Enrichment*

प्रस्तावना
भारत की शिक्षा प्रणाली में कला का सदैव महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था में संगीत, चित्रकला, शिल्प और नाटक शिक्षा का अभिन्न अंग थे। आधुनिक काल में शिक्षा अधिकतर परीक्षा-केन्द्रित हो गई, जिसके कारण रचनात्मकता और अनुभवात्मक अधिगम पीछे छूट गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को बहुआयामी, लचीला और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने पर बल देती है। कला-समेकित शिक्षा इसी परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार द्वारा जुलाई 2020 में लागू की गई नई शिक्षा नीति है। यह लगभग 34 साल बाद लाई गई और इसका उद्देश्य देश की शिक्षा व्यवस्था को बेहतर, आधुनिक और विद्यार्थियों के अनुकूल बनाना है। इस नीति का मुख्य लक्ष्य बच्चों का समग्र विकास करना है, यानी उनका मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास एक साथ हो।

इस नीति में पहले की 10+2 प्रणाली को बदलकर 5+3+3+4 ढांचा लागू किया गया है, जो बच्चों की उम्र और समझ के अनुसार बनाया गया है। छोटे बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा (3 से 6 वर्ष) पर विशेष ध्यान दिया गया है। कक्षा 5 तक पढ़ाई मातृभाषा या स्थानीय भाषा में कराने की सिफारिश की गई है, ताकि बच्चे विषय को आसानी से समझ सकें।

इस प्रणाली में विद्यार्थियों को अपनी रुचि के अनुसार विषय चुनने की स्वतंत्रता दी गई है। रटने की जगह समझकर और गतिविधियों के माध्यम से सीखने पर जोर दिया गया है। उच्च शिक्षा में भी कई सुधार किए गए हैं, ताकि विद्यार्थी अधिक लचीले तरीके से पढ़ाई कर सकें। कुल मिलाकर, यह नीति शिक्षा को अधिक प्रभावी और उपयोगी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

साहित्य की समीक्षा
कई शिक्षाविदों ने कला और शिक्षा के संबंध पर प्रकाश डाला है।

- हावर्ड गार्डनर ने बहु-बौद्धिकता सिद्धांत में बताया कि प्रत्येक बालक की बुद्धि अलग प्रकार की होती है।
- जॉन डेवी ने अनुभवात्मक अधिगम को शिक्षा का मूल आधार माना।
- भारतीय परिप्रेक्ष्य में एनसीईआरटी ने कला-समेकित शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा में लागू करने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं।

इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि कला शिक्षण-अधिगम को अधिक प्रभावशाली बनाती है।

अनुसंधान के उद्देश्य

- कला-समेकित शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इसके महत्व का विश्लेषण करना।
- कक्षा-शिक्षण में इसकी आवश्यकता को समझना।
- दैनिक जीवन में इसके व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत करना।
- चुनौतियों एवं समाधान का सुझाव देना।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक प्रकृति का है। इसमें द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकें, शोध-पत्र, नीति दस्तावेज़ का विश्लेषण किया गया है।

कला-समेकित शिक्षा के सिद्धांत

(1) अनुभवात्मक अधिगम का सिद्धांत
विद्यार्थी जब स्वयं गतिविधि में भाग लेते हैं, तो वे अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं।

(2) बाल-केंद्रित शिक्षा का सिद्धांत
शिक्षा का केंद्र शिक्षक नहीं, बल्कि विद्यार्थी होता है। कला-गतिविधियाँ विद्यार्थियों को सक्रिय बनाती हैं।

(3) बहु-बौद्धिकता का सिद्धांत
हर विद्यार्थी की बुद्धि अलग-अलग प्रकार की होती है संगीतात्मक, शारीरिक, दृश्य आदि। कला-समेकित शिक्षा इन सभी क्षमताओं को विकसित करने में सहयोग करती है।

(4) सहयोगात्मक अधिगम
समूह में नाटक या प्रोजेक्ट कार्य करने से विद्यार्थियों में टीम भावना विकसित होती है।

(5) समग्रता का सिद्धांत
ज्ञान को अलग-अलग विषयों में बाँटने के बजाय एक समग्र रूप में प्रस्तुत करना।

अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों में रचनात्मकता और गहन समझ की कमी देखी जा रही है। अधिकांश विद्यार्थी विषयों को रटकर परीक्षा में अंक प्राप्त करने तक सीमित रहते हैं। ऐसी स्थिति में कला-समेकित शिक्षा एक प्रभावी विकल्प प्रस्तुत करती है।

यह अध्ययन आवश्यक है क्योंकि:

- शिक्षा में कला के महत्व को पुनः स्थापित करना समय की आवश्यकता है।
- विद्यालय स्तर पर शिक्षकों को व्यावहारिक दिशा-निर्देश प्रदान करना आवश्यक है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों को व्यवहारिक रूप में समझना आवश्यक है।

कला-समेकित शिक्षा की अवधारणा

कला-समेकित शिक्षा का अर्थ है अन्य विषयों के अध्ययन में कला के तत्वों को सम्मिलित करना, ताकि शिक्षण अधिक प्रभावशाली और रोचक बने।

उदाहरण के लिए-

- गणित में आकृतियों को चित्रकला के माध्यम से समझाना।

- हिंदी या अंग्रेज़ी में कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करना।
- पर्यावरण अध्ययन में लोकगीतों के माध्यम से प्रकृति संरक्षण की शिक्षा देना।

यह केवल कला सिखाने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि कला के माध्यम से अन्य विषयों की गहरी समझ विकसित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कला-समेकित शिक्षा का स्थान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को समग्र, बहुआयामी एवं रचनात्मक बनाने पर बल देती है। इस नीति में कला को केवल सहगामी गतिविधि (Co-curricular Activity) के रूप में ही नहीं, बल्कि शिक्षण-अधिगम की मुख्य धारा का अभिन्न अंग माना गया है।

(1) समग्र विकास पर बल

NEP 2020 का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों का बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास करना है। कला-समेकित शिक्षा इस उद्देश्य की पूर्ति का प्रभावी माध्यम है क्योंकि कला विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति, संवेदनशीलता और सृजनात्मकता को विकसित करती है।

(2) अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित अधिगम

इस नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा को रटने (Rote Learning) से हटाकर अनुभवात्मक, खोजपरक और गतिविधि-आधारित बनाया जाए। कला-समेकित शिक्षा इस दिशा में एक प्रभावी उपकरण है जैसे नाटक, चित्रकला, संगीत, लोककला आदि के माध्यम से विषय-वस्तु को समझाना।

(3) अंतर्विषयक दृष्टिकोण

NEP 2020 बहुविषयक शिक्षा को बढ़ावा देती है। कला को विज्ञान, गणित, भाषा और सामाजिक विज्ञान से जोड़कर पढ़ाने से विषयों के बीच संबंध स्पष्ट होता है। इससे ज्ञान अधिक स्थायी और अर्थपूर्ण बनता है।

(4) भारतीय कला एवं संस्कृति का संरक्षण

इस नीति में स्थानीय कला, शिल्प, लोक परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर जोर दिया गया है। इससे न केवल हमारी सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है बल्कि विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना का विकास भी होता है।

(5) मूल्यांकन प्रणाली में परिवर्तन

NEP 2020 में समग्र मूल्यांकन (Holistic Assessment) पर बल दिया गया है। कला-समेकित गतिविधियाँ विद्यार्थियों की रचनात्मकता और व्यावहारिक कौशल का आकलन करने में सहायक होती हैं।

शिक्षण-अधिगम की नई दिशाएँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षण-अधिगम को नई दिशा प्रदान करती है। कला-समेकित शिक्षा इन नई दिशाओं का प्रमुख आधार बनती है।

(1) छात्र-केंद्रित शिक्षा

अब शिक्षक ज्ञान देने वाला मात्र माध्यम नहीं, बल्कि मार्गदर्शक है। कला के माध्यम से विद्यार्थी स्वयं खोजकर सीखते हैं।

(2) रचनात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन का विकास

कला विद्यार्थियों को सोचने, कल्पना करने और समस्याओं के समाधान खोजने की प्रेरणा देती है। इससे **रचनात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन** विकसित होता है।

(3) प्रोजेक्ट एवं गतिविधि-आधारित अधिगम

विषय को प्रोजेक्ट, मॉडल, नाटक, पोस्टर, प्रस्तुति आदि के माध्यम से समझाना नई शिक्षण दिशा है। इससे सीखना आनंददायक और प्रभावी बनता है।

(4) तकनीक और कला का समन्वय

डिजिटल आर्ट, ई-प्रजेंटेशन, ऑडियो-विजुअल सामग्री, वर्चुअल प्रदर्शनी आदि आधुनिक शिक्षण विधियाँ हैं जो कला और तकनीक को जोड़ती हैं।

A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June 2026
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2026
http://hillquest.pratibha-spandan.org

(5) समावेशी शिक्षा
कला सभी प्रकार के विद्यार्थियों विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अभिव्यक्ति का अवसर देती है। यह शिक्षा को अधिक समावेशी बनाती है।

(6) जीवन कौशल आधारित अधिगम
कला के माध्यम से सहयोग, नेतृत्व, आत्मविश्वास, संचार कौशल और भावनात्मक संतुलन जैसे जीवन कौशल विकसित होते हैं।

कक्षा-शिक्षण में कला-समेकित शिक्षा की आवश्यकता

आज की शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी अक्सर रटकर परीक्षा पास करने की प्रवृत्ति अपनाते हैं। इससे विषय की गहरी समझ विकसित नहीं हो पाती। ऐसे में कला-समेकित शिक्षा की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।

(1) जटिल विषयों को सरल बनाना
गणित के कठिन सिद्धांतों को चित्र और गतिविधियों द्वारा समझाया जा सकता है।

(2) ध्यान और रुचि बनाए रखना
संगीत या नाटक के माध्यम से पढ़ाई करने से विद्यार्थी अधिक उत्साहित रहते हैं।

(3) समावेशी शिक्षा
कमज़ोर विद्यार्थी भी कला-गतिविधियों के माध्यम से सीखने में सक्षम होते हैं।

(4) मानसिक स्वास्थ्य में सुधार
कला तनाव को कम करती है और विद्यार्थियों को भावनात्मक रूप से संतुलित बनाती है।

(5) शिक्षा को रोचक बनाये रखने के लिए
यदि पाठ केवल व्याख्यान तक सीमित हो, तो विद्यार्थी ऊब सकते हैं। कला गतिविधियाँ सीखने को आनंददायक बनाती हैं।

(6) स्थायी अधिगम
जो ज्ञान अनुभव के माध्यम से प्राप्त होता है, वह लंबे समय तक याद रहता है।

(7) 21वीं सदी के कौशल
संचार, सहयोग और सृजनात्मक सोच जैसे कौशल विकसित होते हैं।

दैनिक जीवन में कला-समेकित शिक्षा के व्यावहारिक उदाहरण

(1) गणित
सममिति (Symmetry) को रंगोली बनाकर समझाना।

भिन्न (Fractions) को रोटी या पिज़्ज़ा के टुकड़ों से समझाना।

(2) विज्ञान
जल-चक्र का मॉडल बनाना।

पौधों के भागों का चित्र बनाकर समझाना।

(3) भाषा
कहानी का नाट्य-रूपांतरण।

कविता को लय और संगीत के साथ प्रस्तुत करना।

(4) सामाजिक विज्ञान
ऐतिहासिक घटनाओं को अभिनय के माध्यम से समझाना।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June 2026
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2026
http://hillquest.pratibha-spandan.org

मानचित्र को रंगों और प्रतीकों से सजाकर प्रस्तुत करना।

(5) दैनिक जीवन से उदाहरण
स्वच्छता अभियान पर पोस्टर बनाना।

जल संरक्षण पर लोकगीत तैयार करना।

त्यौहारों के माध्यम से सांस्कृतिक विविधता समझाना।

ये सभी उदाहरण दर्शाते हैं कि कला केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि शिक्षण का सशक्त माध्यम है।

कला-समेकित शिक्षा के उद्देश्य

कला-समेकित शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रखकर उसे अनुभवात्मक और जीवनोपयोगी बनाना है। इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

सर्वांगीण विकास
विद्यार्थी के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक विकास को संतुलित रूप से बढ़ावा देना। उदाहरण के लिए, नाटक के माध्यम से भाषा सीखने पर अभिव्यक्ति कौशल, आत्मविश्वास और सामाजिक सहभागिता तीनों का विकास होता है।

रचनात्मकता का विकास
कला विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति को प्रोत्साहित करती है। चित्र बनाते समय या गीत रचते समय विद्यार्थी नए विचारों का सृजन करते हैं।

विषय की गहन समझ
कठिन विषयों को कला के माध्यम से सरल और स्थायी बनाया जा सकता है। जैसे—गणित में भिन्न को कागज काटकर समझाना।

सांस्कृतिक जागरूकता
स्थानीय लोककला, लोकगीत और परंपराओं को शिक्षा में शामिल कर विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति से जोड़ना।

आत्मविश्वास एवं अभिव्यक्ति कौशल
मंच पर प्रस्तुति देने से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करना सीखते हैं।

कला-समेकित शिक्षा के लाभ

(1) विषय की गहरी समझ
विद्यार्थी केवल याद नहीं करते, बल्कि समझते हैं।

(2) आत्मविश्वास में वृद्धि
मंच पर प्रस्तुति देने से झिझक कम होती है।

(3) सामाजिक कौशल
समूह कार्य से सहयोग और नेतृत्व क्षमता बढ़ती है।

(4) रचनात्मक सोच
नई-नई गतिविधियों से सृजनात्मकता विकसित होती है।

(5) सीखने में आनंद
शिक्षा बोझ न लगकर आनंद का अनुभव देती है।

चुनौतियाँ

(1) प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी
सभी शिक्षक कला-आधारित शिक्षण में दक्ष नहीं होते।

(2) संसाधनों का अभाव
ग्रामीण क्षेत्रों में सामग्री और सुविधाएँ सीमित हो सकती हैं।

(3) समय की कमी
पाठ्यक्रम पूरा करने के दबाव में कला गतिविधियों के लिए समय निकालना कठिन होता है।

(4) परीक्षा-केन्द्रित प्रणाली
मूल्यांकन अधिकतर लिखित परीक्षा पर आधारित है।

समाधान
यद्यपि कला-समेकित शिक्षा अत्यंत प्रभावी है, फिर भी इसके क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँ आती हैं। इन चुनौतियों के समाधान निम्नलिखित हैं:

(1) शिक्षक प्रशिक्षण

- नियमित इन-सर्विस प्रशिक्षण
- कला-समेकित शिक्षण पर कार्यशालाएँ
- B.Ed. एवं D.El.Ed. पाठ्यक्रम में कला-समेकन को शामिल करना

(2) संसाधनों की उपलब्धता

- विद्यालयों में कला-कक्ष एवं सामग्री
- स्थानीय कलाकारों को विद्यालय से जोड़ना
- कम लागत वाली शिक्षण सामग्री का उपयोग

(3) मूल्यांकन प्रणाली में सुधार

- केवल लिखित परीक्षा पर निर्भरता कम करना
- प्रोजेक्ट, प्रस्तुति और रचनात्मक कार्यों को मूल्यांकन में शामिल करना

(4) प्रशासनिक सहयोग

- विद्यालय प्रबंधन का सकारात्मक दृष्टिकोण
- समय-सारणी में कला गतिविधियों के लिए उचित समय

(5) जागरूकता एवं मानसिकता में परिवर्तन

- अभिभावकों और शिक्षकों में जागरूकता
- कला को 'अतिरिक्त' नहीं बल्कि 'आवश्यक' मानना

(6) नीति का प्रभावी क्रियान्वयन

- राज्य और केंद्र स्तर पर निगरानी
- समय-समय पर समीक्षा
- सफल मॉडलों का प्रसार

http://hillquest.pratibha-spandan.org

निष्कर्ष

कला-समेकित शिक्षा शिक्षण-अधिगम को नई दिशा प्रदान करती है। यह विद्यार्थियों को केवल ज्ञान प्राप्त करने वाला नहीं, बल्कि सृजनशील और संवेदनशील व्यक्तित्व बनाने का माध्यम है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत इसे प्रभावी रूप से लागू करने से शिक्षा अधिक जीवंत, सार्थक और जीवनोपयोगी बन सकती है। यदि विद्यालय, शिक्षक और अभिभावक मिलकर प्रयास करें, तो कला-समेकित शिक्षा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

References

Dewey, J. (1938). Experience and education. Macmillan.
Gardner, H. (1983). Frames of mind: The theory of multiple intelligences. Basic Books.
Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education.
Kothari Commission. (1966). Education and national development. Government of India.
National Council of Educational Research and Training. (2021). Guidelines for art-integrated learning. NCERT.
National Council of Educational Research and Training. (2021). Guidelines for art-integrated learning. NCERT.
Piaget, J. (1972). The psychology of the child. Basic Books.
UNESCO. (2006). Road map for arts education. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.
UNESCO. (2010). Seoul agenda: Goals for the development of arts education. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.